"युग निर्माण मिशन का जीवन शैली तथा मूल्य-उन्मुखीकरण पर प्रभाव का अध्ययन"

"A STUDY OF THE IMPACT OF YUG NIRMAN MISSION ON LIFE STYLE & VALUE ORIENTATION"

मनोविज्ञान विषय में पी-एच. डी. उपाधि की प्राप्ति हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध का प्रारूप

विक्रम संवत् २०५८-५९

2005

निर्देशक

डॉ. लता गैरोला
विभागाध्यक्ष
(मनोविज्ञान विभाग)
हे.न.ब.वि.वि.
श्रीनगर, गढ़वाल

शोध छात्र

अविनाश विहारिया
एम.एस-सी. मनोविज्ञान

मनोविज्ञान विभाग

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

गायत्रीकुंज, शांतिकुंज, हरिद्वार
उत्तरांचल–249411

❖ अध्ययन की आवश्यकता–

वर्तमान में जीवन स्तर विकृत होता जा रहा है। भौतिकतावादी उन्नति की चाह ने जीवन को उन्नति की ओर कम, अवनति की ओर अधिक अभिमुख किया हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में सामाजिक परिवर्तन की गति तीव्र रही और अनेक परिवर्तन हुये जिन्हें आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, संस्कृतिकरण आदि के रुप में जाना जाता हैं। आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, के नाम पर भारतीय समाज में कुछ विकासात्मक परिवर्तन अवश्य हुये हैं परंतु यह विकास साथ में अनेकों पीड़ाओं एवं कष्टों को लेकर आया। अवांछनीय तत्वों के ग्रहण से निम्नगामी परिवर्तन हुये इनमें फैशन की वृत्ति, सामाजिक–पारिवारिक विघटन, नशेबाजी, चरित्र–हीनता, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, अनैतिकता, मूल्यावनयन आदि प्रमुख पतनोन्मुखी परिवर्तन हैं।

आज बिखरते समाज एवं दाम्पत्य जीवन, गलत आहार–विहार, अव्यवस्थित समय प्रबंधन, अदूरदर्शिता, अहंकार, परिस्थितियों से लड़ने की अक्षमता, आर्थिक–सामाजिक विषमता, अंधानुकरण, मानसिक प्रदूषण, पारिवारिक कष्टों, अतृप्त अभिलाषाओं एवं अनन्त इच्छाओं के फलस्वरूप जीवन को एक सही पद्धति से जीने में असफल रहा है। व्यक्ति में बढ़ते अवसाद, तनाव जैसे मानसिक रोग हो या हृदय, उच्च रक्त–चाप, मधुमेह, मोटापा जैसे शारीरिक रोग हो, यह सभी विकृत जीवन शैली एवं जीवन मूल्यों के अभाव का ही परिणाम है।

आज प्रतिदिन समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाली खबरें जीवन मूल्यों के विघटन एवं अवनति को बयान करते है। अमर उजाला की यह खबर (गर्भ से बच्चे की चोरी, महज 250 रुपये में बेटी को बेच डाला – अमर उजाला, देहरादून, 05 नवम्बर 2004 पृ.16) यह बताने के लिए उपयुक्त होगी। जीवन मूल्यों के बेतहाशा पतन ने मानवीय मेधा को चुनौती दे रखी है। जीवन से तो सभी परिचित है, लेकिन उसके मूल्यांकन की चेष्टा कम ही लोग करते हैं। जीवन मूल्यों के विकास का अर्थ है, शाश्वत जीवन मूल्य। संवेदना की जीवन के सभी क्षेत्रों में अधिकाधिक अभिव्यक्ति। आज यंत्र के रूप में परिणत होते मानव में यथार्थ में न करूणा रह गई है, न ही मानवता। वह है मात्र संदेहवादी। उसे जीवन के प्रति भी संदेह है। इसी कारण नशे जैसी दुष्प्रवृत्तियां तथा मनोरोग जैसी व्याधियां बढ़ती जा रही हैं।

जीवन मूल्य मानवीय आचरण तथा व्यवहारों का एक मापदण्ड या मानक है। जिसके नियमन से एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण होता है। जीवन मूल्य सनातन होते है, व्यक्ति अपने संकुचित स्वार्थों तथा जीवन के प्रति उचित दृष्टि के अभाव के कारण उन पर पर्दा डाल देता है और पतन की गर्त में स्वयं तो गिरता ही है, साथ ही संस्कृति और सभ्यता के विनाश का कारण बनता है।

लक्ष्य के अनुसार अपने जीवन का सुसंतुलित, व्यवस्थित पैटर्न के अनुसार संचालित करना ही जीवनशैली है।

आज अस्त–व्यस्त जीवन शैली और नकारात्मक आदतें भी बहुमूल्य अवसरों को होली के समान जलाती रहती हैं। ये साधनों को, जिनके द्वारा सफलता पाई जा सकती है, उन्हें या तो नष्ट कर देती हैं या उन्हे जटिल बना देती है। आज आवश्यकता है कि अस्त–व्यस्त जीवनशैली को सुव्यवस्थित तथा सोच को कार्य के अनुरूप ढालने की, लेकिन बुद्धिमता के इस युग में अंतःप्रज्ञा की उपेक्षा के फलस्वरूप मनुष्य अनगढ़ जीवन जी रहा है।

हर युग के विद्वान चाहे वह वैदिक युग हो या आज का वैज्ञानिक युग एक ऐसी जीवनशैली की खोज करते रहे है जो व्यक्ति को सही अर्थों में जीना सीखायें।

'शाश्वत सिद्धांतों का सामयिक परिस्थितियों में उचित उपयोग कैसे हो, ऐसी सूक्ष्मदृष्टि विरलों में ही होती हैं। ऐसे व्यक्तियों को युगदृष्टा कहते है।'

आज की इन भयावह परिस्थितियों का समाधान इस युग के दृष्टा आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा जी ने दिया है। उन्होंने आदर्श जीवन शैली को संजीवनी विद्या, जीवन कला, जीवन साधना आदि नामों से परिचित कराया तथा उन्हें आत्मसात करने का शिक्षण दिया। वे श्रेष्ठ जीवन शैली तथा उसकी उपयोगिता के संदर्भ में कहते हैं, " संसार कला–कौशलों से भरा पड़ा है। उन्हीं के

आधार पर लोग समृद्ध, प्रख्यात एवं समर्थ बनते है। कला–कौशलों में मूर्धन्य है जीवन कला। इसी को संजीवनी विद्या कहते है। जिसे जीना आता है, उसे सब कुछ आता है। जो इस विद्या से अपरिचित है, उसका विशाल वैभव कागजी रावण की तरह ढकोसला है। जीवन शैली वही अच्छी है, जो शांति तथा संतोष प्रदान करें एवं परम लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ाती चलें।"

आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा द्वारा प्रणीत युग निर्माण मिशन द्वारा मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण के लक्ष्य की प्राप्ति में उपलब्धि के रूप में 15 करोड़ लोगों के एडीक्शन एवं बुरी आदतों को छुड़ाने में तथा लाखों लोगों को अध्यात्मिक दिनचर्या प्रदान की है। युग निर्माण योजना की जीवन शैली का आधार है– उसके 18 सत्संकल्प जो गीता के 18 अध्याय कहलाते है, जो सतयुग की वापसी का आधार है।

भौतिकतावादी प्रगति ने व्यक्ति तथा समाज को समृद्ध तो बनाया है लेकिन उसके बदले यह प्रगति आंतरिक शांति एवं आनंद को छीन ले गई। व्यक्ति, परिवार एवं समाज विघटित हो गये। आज भी वर्षो से समाज में जड़े जमाई कुरीतियों, अंधविश्वासों, परंपराओं से समाज मुक्त नहीं हुआ हैं, जो मानव समाज के विकास में बाधक रही हैं। इन व्यक्ति एवं समाज के विकास में अवरोधक तत्वों को हटाने के लिये विभिन्न प्रकार के सामाजिक, राजनैतिक आंदोलन हुए जिनका प्रभाव छोटे–बड़े रुप में हुआ, लेकिन वे समग्र रुप नहीं ले सकें।

"सामाजिक आंदोलन समाज में परिवर्तन के लिये किया गया सामूहिक प्रयास हैं। यह व्यक्ति से प्रारम्भ होकर समाज तक पहुँचता है।" विभिन्न आंदोलनों का प्रभाव समाज के छोटे–छोटे आयामों को बदलने में सफल रहा है, जैसे –राष्ट्रीय शिक्षा अभियान, ब्रह्म समाज आंदोलन, आर्य समाज आंदोलन आदि।

लेकिन आज एक समग्र कांति (आमूल–चूल परिवर्तन) की आवश्यकता हैं जिसे आचार्य श्री ने आध्यात्मिक कांति का नाम दिया है। समाज में समग्र परिवर्तन धर्म प्रकिया के माध्यम से व्यक्ति, परिवार एवं समाज निर्माण कर जितनी अच्छी तरह संपन्न किया जा सकता हैं उतनी अच्छी तरह अन्य किसी प्रकार से नहीं । आचार्य पं. श्रीराम शर्मा जी कहते हैं –" व्यक्ति के अंतः करण की गहराई तक कुछ उतारना हो तो इसके लिये एक मात्र आधार अध्यात्म है। यह अंतरंग को स्पर्श करने वाली, सुधारने एवं ढालने की विद्या है। मात्र इससे ही आस्थाएं बदली जा सकती हैं और निष्ठाएं प्रतिस्थापित की जा सकती हैं।" आचार्य पं. श्रीराम शर्मा जी जिनका जन्म 20 सितम्बर 1911 को आँवलखेड़ा में हुआ । इन्होने एक आंदोलन चलाया जिसे युगनिर्माण आंदोलन या विचार कांति अभियान कहते हैं। जिसका आधार अध्यात्म है और इसका उद्देश्य है –धरती पर स्वर्ग का अवतरण तथा मनुष्य में देवत्व का उदय । इसका उद्देश्य अतिव्यापक है तथा क्षेत्र अतिविस्तृत हैं। इस आंदोलन के चार भाग हैं–

प्रचारात्मक आंदोलन
रचनात्मक आंदोलन
सुधारात्मक आंदोलन –संघर्षात्मक आंदोलन

इन्हें ही आज सप्तकांति के रुप में जाना जाता है जो इस प्रकार है–

साधना
स्वास्थ्य
शिक्षा
स्वावलंबन
पर्यावरण
नारी जागरण
व्यसन कुरीति उन्मूलन

गांधी जी ने कहा हैं– भारत की आत्मा गॉवों में निवास करती हैं। ग्रामोत्थान से ही देशोत्थान होगा । इन दिनों मनोदशा में जिस कदर विकृति आयी है, उससे नैतिक मूल्यों के असाधारण हनन से अपराधिक गतिविधियां भी बढ़ी है। देखा गया हैं कि जीवन स्तर के विकास के साथ–साथ मानवी मूल्यों में उत्थान नहीं, पतन ही हुआ है। जहाँ ग्रामों में लोग भौतिक संसाधनों के अभाव में प्रसन्न, शांत एवं संतोषी जीवन व्यतीत करते थे, उनमें चातुरी और धूर्तता नगण्य होती थी पर जैसे–2 गॉव कस्बों में बदल रहे है, वैसे–2 ग्रामीणों की निष्कपटता खोती रही है। आपाधापी और छल–छद्म का प्रारंभ बस यही से होता है, यही से बढ़ते–2 प्रारंभ होता उठाईगिरी, धोखाधड़ी, बेईमानी जैसे सामाजिक– आर्थिक अपराधों का अंतहीन सिलसिला।

युग निर्माण मिशन जिसका उद्देश्य है—युग परिवर्तन। उसका कार्य क्षेत्र ग्राम से प्रारम्भ होता है। यह भारत ग्रामों से मिलकर बना है। ग्रामों के उत्थान से ही देशोत्थान हो सकता है। युग निर्माण मिशन द्वारा मनुष्य में जीवन मूल्यों के विकास एवं जीवन शैली के आदर्श को प्रस्तुत कर धरती पर स्वर्ग के अवतरण की जो बात कहीं गई है उसका प्रभाव एवं उसकी सार्थकता का वैज्ञानिक प्रतिपादन करना तथा आदर्श जीवन शैली एवं जीवन मूल्यों का व्यक्तित्व एवं सामाजिक विकास में महत्व की विवेचना करना तथा आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा द्वारा प्रस्तुत जीवन शैली की मनोवैज्ञानिक व्याख्या करना प्रस्तुत शोध का उद्देश्य है।

❖ साहित्यिक पुनरावलोकन (Review of litrature)

आर0 पी0 सिंह (1986):— ने अपने अध्ययन में पुरानी पीढ़ी व नई पीढ़ी के बीच मूल्यों को खोजने का प्रयत्न किया । परिणामों से ज्ञात होता हैं कि दोनो पीढ़ियों में छः विभिन्न मूल्यों सैद्वांतिक, आर्थिक, सौंदर्य ललितकला, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक आदि में सार्थक अंतर पाया जाता हैं।

एन0 एस0 चौहान, सरोज अरोड़ा, एम0 माथुर (1986):— ने युवकों में मूल्य उन्मुखता से संबंधित तथ्यों का अध्ययन किया। परिणाम दर्शाते है कि अकेलापन (Alienation) युवकों में Value-anemia है। Alienation का संबंध किशोरों के धार्मिक व आर्थिक स्तर से संबंधित हैं। Alienated-hindu युवको की मूल्य—उन्मुखता non- alienated मुस्लिम युवको से बेहतर हैं।

सी0 पी0 सोलंकी और सरोज अरोड़ा (1990):—ने छात्रों के हिंसात्मक व्यवहार पर मूल्य सदिश अध्ययन किया परिणाम बताते हैं कि हिंसात्मक व्यवहार स्नातकोत्तर किशोरों में अधिक पाया गया जो मूल्य प्रेरण अंतःकिया से संबंधित हैं।

एन0 एस0 चौहान (1994):— ने अथर्ववेद के "पृथ्वी सूक्त" जिसमें कि प्रत्यक्षण और आकांक्षाओं का मूल्य सदिश मैट्रिक्स हैं, पर अध्ययन किया । 'सूक्त' में 63 मंत्र हैं। प्रत्यक्षण और आकांक्षा जो कि मंत्रों में है को महत्वपूर्ण मूल्यों के लिये कहॉ जाता हैं जैसे कि संबंध, आदर्श, संबंधन और सुंदरता आदि । इनके साथ साथ भावाभिव्यक्ति, बढ़ावा देना, सुरक्षा आदि सदिश पर भी जोर दिया गया।

एच0 शैलजा और सानन्दराज (1994):—मानसिक स्वास्थ्य स्तर और मूल्य—उन्मुखता, व्यसनी तथा मद्यपानी के बीच मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया । 30 मद्यपानियो और 15 व्यसनियों के बीच मानसिक स्वास्थ्य के स्तर और मूल्य उन्मूखता को देखा गया प्रयोज्यो पर मानसिक स्वास्थ्य स्थिति मापनी (गीरीसेन और सानंदराज,1988) और मूल्यों का अध्ययन (थेंकम, 1968) को प्रशासित किया गया। प्रयोज्यो से उनका वैयक्तिक डाटा सामान्य डाटा सीट से इकट्ठा किया गया। मद्यपानी का , सामान्यों की अपेक्षा आत्मसंयुक्त वातावरणीय चर और संपूर्ण मानसिक स्वास्थ्य स्तर के प्रति दृष्टिकोण भिन्न था। व्यसनी भी सामान्यो की अपेक्षा संयुक्त स्वायत्ता वातावरणीय चर और संपूर्ण मानसिक स्वास्थ्य स्तर में भिन्न थे।

हसीन जै और एस0 रेखा (1995):—इन्होने राष्ट्रीय युग्मन का दस मूल्य उन्मुख कियाकलापों का अध्ययन किया। प्राप्त परिणामों में प्रायोगिक समूह में नियंत्रित समूह की अपेक्षा मूल्य उन्मुख कियाकलापों और राष्ट्रीय युग्मन में सार्थक बढ़ोत्तरी देखी गई।

आलोक कुमार (1997):—ने अपने इस शोधाध्ययन में गाजियाबाद जिले के सोलाना ग्राम के 50 लोगो पर युग निर्माण आंदोलन का प्रभाव देखा । उन्होंने इस अध्ययन में साक्षात्कार तथा निरीक्षण विधि का उपयोग किया तथा परिणामों में पाया कि युग निर्माण आन्दोलन व्यक्ति स्तर पर सत्प्रवृत्तियों के सम्वर्धन तथा दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन में सहायक सिद्ध हुआ जिससे परिवार एवं समाज में सकारात्मक परिवर्तन हुए।

आर0 एल0 भारद्वाज (1999):– ने मूल्य द्वंद्व मापन के विकास पर कार्य किया वर्तमान स्केल का उद्देश्य छः दो शाखाओं वाले मूल्य द्वंद्वो जैसे कि नफरत–प्यार, भय–निर्भय आदि को मापा।

गौतम गवाली एवं जी0 एन0 कुंबले (1999):– ने धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, और पारिवारिक मूल्यों पर अध्ययन किया । परिणाम बताते हैं कि पुरानी पीढ़ी का धार्मिक, सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों के प्रति अधिक सम्मान था। नयी पीढ़ी का रुझान आर्थिक विषयो की ओर था। आर्थिक मूल्यों के प्रति दोनो पीढ़ियो के बीच सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

आर0 पी0 पाराशर (2000):–यह अध्ययन मनोदैहिक रोगों के बढ़ने की संभावना पर दृष्टि डालता है, जिसमें कि बिगड़ी जीवनशैली को इसके लिये मुख्य कारक माना गया है। भारतीय जीवन विज्ञान आयुर्वेद में बताया गया है कि सकारात्मक स्वास्थ्य और प्रसन्नता की स्थिति को प्राप्त करने के लिये आहार, विहार, आचार और विचार को सही तरीके से नियमित करने व लागू करने की आवश्यकता हैं।

राजेश कुमार सिन्हा और मृदुला मिश्रा (2001):– इस अध्ययन में यौगिक जीवन शैली का अवसाद व चिंता पर प्रभाव देखा गया। इसमें सभी प्रयोज्यो को यौगिक जीवनशैली को 15 दिन तक जीया जिसमें आसन, प्राणायाम, मुद्रा, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान आदि शामिल थे। इसके अतिरिक्त सात्विक भोजन शामिल था। प्री–पोस्ट प्रयोग के बाद परिणाम में चिंता –अवसाद के स्तर में सार्थक अंतर पाया गया ।

प्रीति माथुर एवं भारती (2001):– ने कार्य करने वाली एवं कार्य न करने वाली महिलाओं की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं और मूल्यो का अध्ययन रोजगार पर किया। परिणाम बताते है कि दोनो समूह में सौंदर्य ललितकला के प्रति कोई अंतर नहीं है। परंतु बहुत सारी आवश्यकताओं में सार्थक मध्यमान अंतर पाया गया। सुझाव दिया गया कि कार्यरत और कार्य न करने वाली अविवाहित महिलाओं की आवश्यकता पैटर्न और मूल्यों पर रोजगार का प्रभाव पड़ता हैं।

एनेमिन हेवमिन, ए0 जोस एमोरिम कूज, मेरीट ओसलर और ए0 वान सत्वेरेन (2002):– तीन स्वस्थ जीवन शैलियों के व्यवहार का एकल में या संगठित रुप में प्रभाव–धूम्रपान रहित, शारीरिक रुप से सकिय और उच्च गुणवत्ता वाला आहार सेनेका अध्ययन के अंतर्गत बुढ़े लोगो के बीच देखा गया। यह युरोपियन लॉगिट्यूडनल अध्ययन (1988–1989) से शुरु हुआ और अप्रेल 30, 1999 को अंत किया गया । इसमें 631 पुरुष और 650 महिला 70 से 75 वर्ष तक की जनसंख्या को लिया गया। यह प्रतिदर्श बैलजियम, डेनमार्क, इटली, नेदरलैंड,पुर्तगाल, स्पेन और स्वीटर्जलैंड से लिया गया। जीवनशैली जैसे कि धूम्रपान, स्वास्थ्य, शारीरिक सकियता और आहार–गुणवत्ता के प्रदत्त को शामिल कर गणना की गई। एकल–जीवन शैली कारक और जीवनशैली प्रदत्त मृत्यु से संबंधित थे। यहॉ तक कि 70 से 75 वर्ष की आयु में अस्वस्थ जीवनशैली व्यवहार (धुम्रपान, निम्न गुणवत्ता आहार, शारीरिक सकियता) एकल रुप से बढीं हुई मृत्यु संकट से संबंधित थे। मृत्यु संकट को दोबारा दो अस्वस्थ शैलियों के व्यवहारों के सभी संगठनों के लिये बढ़ा हुआ पाया गया। परिणामों से ज्ञात होता है कि जीवन शैली व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती हैं।

केगेन डब्ल्यू0 ली , ग्रेगरी व्हाय0 एच0 लिप (2003):– इन्होंने अपने अध्ययन में बताया कि जीवनशैली आदतें जैसे कि व्यायाम, धुम्रपान, भोजन और एल्कोहल लेना, का कार्डियोवस्कुलर रोगों पर सार्थक प्रभाव पड़ता हैं। यह अध्ययन जीवनशैली स्वभाव के ब्लड कोएगुलेशन, फाइब्रीनोसिस और प्लेटेलेट रिएक्टीविटी पर होने वाले प्रभाव को मूल्यांकित करता है।

बी0 गुस्टावसोन, ए0 एन0 त्रिपाठी एवं जी0 पी0 राव (2004):– ने अपने अध्ययन में बताया कि मैनेजर कैसे मानवीय मूल्यों के बारे में पढ़ाते हैं, लेखक मानवीय आयाम में मेनेजेरियल डिसीजन में किंग की आवश्यकता को समझाया है। मूल्यों को ईश्वरवाद, मानवतावाद और प्रायोगिक उत्पत्ति से लिया गया हैं और इन्हें व्यक्तिगत, सामाजिक स्तर से जोड़ा गया।

- **समस्या कथन –**

युग निर्माण मिशन का मूल्य उन्मुखीकरण तथा जीवन शैली पर प्रभाव का अध्ययन।

- **अनुसंधान उद्देश्य –**

1. आधुनिक जीवन शैली एवं उसके दुष्प्रभावों का अध्ययन।
2. युग निर्माण मिशन का मूल्य उन्मुखीकरण में योगदान का अध्ययन।
3. युग निर्माण मिशन का स्वस्थ्य जीवन शैली के निर्माण में योगदान का अध्ययन।

- **चरों का विवरण : –**

1. स्वतंत्र चर –
    - युग निर्माण मिशन ।
2. आश्रित चर –
    - जीवन शैली।
    - मूल्य उन्मुखीकरण।
3. अन्य चर –
    - शिक्षा – न्यूनतम् हायर सेकण्डरी।
    - आयु – तीन आयु समूह वर्गों में बॉट कर अध्ययन किया जाएगा, जो निम्न प्रकार से होंगे–
        - समूह – **A** (15 – 25 वर्ष)
        - समूह – **B** (26 – 35 वर्ष)
        - समूह – **C** (36 – 45 वर्ष)
    - लिंग आदि।

❖ युग निर्माण मिशन–

इसका गठन व्यक्ति और समाज के सामाजिक एवं आध्यात्मिक पुनर्निमाण के लिए हुआ। इसके संस्थापक पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी है। अखण्ड ज्योति के 1938 में प्रथम अंक के प्रकाशन के साथ वैयक्तिक रूप से विचार कांति अभियान का बीज रूप में प्रकटन हुआ। गायत्री तपोभूमि जिसकी स्थापना 1953 में 108 कुण्डीय यज्ञ द्वारा हुई, बाद में इसका केन्द्र बना। 1956 में नरमेध यज्ञ और 1958 में सहस्रकुण्डी यज्ञ द्वारा लाखों गायत्री साधकों को एकत्रित कर "गायत्री परिवार" का बीजारोपण हुआ। युग निर्माण योजना एवं युगनिर्माण सत्संकल्प के रूप में मिशन का घोषणा पत्र का प्रकाशन मार्च 1963 की अखण्ड ज्योति में हुआ। युगनिर्माण मिशन, गायत्री परिवार, प्रज्ञा अभियान, विचारकांति अभियान ये सभी एक–दूसरे के पर्याय हैं।

इस मिशन का लक्ष्य युग निर्माण है अर्थात् युग परिवर्तन। इस का क्षेत्र अतिव्यापक है। अतः यह एक सामाजिक –आध्यात्मिक आंदोलन है। मोमेन्ट ऑफ सोसल ट्रांसफारमेशन में गेरलॉक एवं हाइन आध्यात्मिक आंदोलन को परिभाषित करते हुए कहते है – "आध्यात्मिक आंदोलन ऐसे अनुयायियों का समूह है जिनके पास भगवान की दी हुई शक्तियां है और जिनका एक दर्शन एवं उद्देश्य है जो कि बहुत बड़े कार्य को पूर्ण करने के लिए सकिय रूप से भागीदारी करते है। यह भगवान के प्रति श्रद्धा व उसके कार्यों के लिए एक–दूसरे से बंधे होते है।"

युग निर्माण मिशन एक आध्यात्मिक आंदोलन है। इस संदर्भ में पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य कहते है– यह महाकाल का कार्य है, उसी ने यह मिशन, यह परिवार बनाया है। उन्हीं के शब्दों में "महाकाल की युगांतरीय चेतना ने उन संस्कारी आत्माओं को ढूंढ़ा जिनके पास आत्मबल की

पूर्व संचित संपदा समुचित मात्रा में पहले से विद्यमान थी। गायत्री यज्ञों के बहाने, सत्साहित्य के आकर्षण से, व्यक्तिगत संपर्क एवं पकड़ से मणिमुक्तक की स्फटिक माला गूँथा, जिसे युगनिर्माण परिवार कहते है।"

आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा के अनुसार आज सभी समस्याओं का एक ही कारण है जीवन जीने की कला से अनभिज्ञ होना। युग निर्माण मिशन अपने प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से व्यक्ति में जीवन जीने की कला से व्यक्ति को परिचित कराता है। युग निर्माण मिशन का मुख्य संचालन केन्द्र गायत्री तीर्थ शांतिकुन्ज हरिद्वार है तथा युगनिर्माण के लिए साहित्य का प्रकाशन एवं प्रचार का केन्द्र गायत्री तपोभूमि मथुरा है।

- युग निर्माण मिशन का उद्देश्य –

मनुष्य में देवत्व का उदय तथा धरती पर स्वर्ग का अवतरण।

अर्थात् मानव समाज को निम्न उपलब्धियां प्रदान करना है–

1. स्वस्थ शरीर
2. स्वच्छ मन
3. सभ्य समाज

- युग निर्माण मिशन का लक्ष्य की पूर्ति का आदर्श –

सभ्य समाज के निर्माण के लिए भावनात्मक नवनिर्माण की सीढ़ियां चढ़नी पड़ती है जिसे निम्नलिखित कहा जाता हैं–

1. आत्मनिर्माण या व्यक्ति निर्माण
2. परिवार निर्माण
3. समाज निर्माण

यह भावनात्मक नवनिर्माण की साधनाएं है जब यह पूर्ण होती है तो उपरोक्त से मानव जाति चिरस्थायी सुख–शांति का आनन्द एवं संतोष लाभ पा सकेगी और धरती पर स्वर्ग का अवतरण होगा।

आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा अध्यात्म को आज की समस्त समस्याओं के समाधान में एक मात्र औषधि के रूप में बताते हैं। नव समाज के नवनिर्माण के लिए विचार क्रांति अभियान को प्रस्तुत करते है। विचार परिवर्तन को ही सतयुग की वापसी का आधार मानते है।

विचार क्रांति के परिप्रेक्ष्य में, उसकी उपयोगिता के विषय में वे अखण्ड ज्योति, अक्टूबर 1992 में लिखते है– "घूम–फिरकर आदमी उससे भी बदतर हालत में आ पहुँचा है, जहाँ से उसने अपनी यात्रा आरंभ की थी। अब उसे नई व्यवस्था के सृजन की आवश्यकता पड़ रही है। कौन करेगा यह सब? इसके लिए एक क्रांति के उस नए आयाम को ढूँढ़ना पड़ेगा, जो विगत भूलों से मुक्त हो, जिसमें व्यक्ति के मनोसामाजिक नवसृजन की क्षमता हो, क्रांति का यह आयाम ही विचार क्रांति है।"

उलटे को उलटकर सीधा करना, मनःस्थिति से परिस्थितियों में बदलाव लाना । यही है महान परिवर्तन को प्रस्तुत कर सकने वाली विचार क्रांति। इसे तीन भागों में प्रस्तुत किया गया है, जो निम्न है–

1. बौद्धिक क्रांति – चिन्तन का परिष्कार
2. नैतिक क्रांति – चरित्र का परिष्कार
3. सामाजिक क्रांति – व्यवहार का परिष्कार

युग निर्माण का प्रारम्भ व्यक्ति से होता है। युग निर्माण मिशन का नारा है– "सुधरे व्यक्ति और परिवार तभी होगा समाज सुधार।"

आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा इस संदर्भ में कहते है –" युग परिवर्तन का अर्थ है, व्यक्ति परिवर्तन और यह महान प्रक्रिया अपने से प्रारम्भ होकर दूसरों पर प्रतिध्वनित होती है अर्थात् इसका सामूहिक रूप सामने आता है।

- युग निर्माण मिशन का आधार–

युग निर्माण मिशन का आधार है, गायत्री और यज्ञ एवं उससे सामाजिक परिवर्तन । आचार्य पं श्रीराम शर्मा ने गायत्री उपासना और यज्ञ प्रकिया को प्रतीक मानकर प्रज्ञा और प्रखरता का समन्वय किया। विचारकांति का गायत्री से एवं सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन को यज्ञ प्रकिया के साथ जोड़ा। ज्ञान और कर्म के क्षेत्र में उत्कृष्टता, आदर्शवादिता के समावेश का यह महत्वपूर्ण आधार माना गया।

न्यूनतम खर्च वाले गायत्री यज्ञों का आचार्य श्री ने प्रचलन किया। जिसमें सम्मिलित होने वालों में से प्रत्येक को एक वैयक्तिक या सामाजिक अवांछनीयताओं में से एक का परित्याग करना और एक सत्प्रवृत्ति को अपनाने का संकल्प लेना पड़ता है। इस माध्यम से उन्होंने लोगों से नशेबाजी, बेइमानी, दहेज, मृतकभोज, ऊंच–नीच, पर्दाप्रथा जैसी अवांछनीयताओ का परित्याग कराया और वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, शिक्षा संवर्द्धन, स्वास्थ्य सुधार, सहकारिता आदि के लिए प्रयत्न करने का संकल्प कराया।

अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय को प्रस्तुत करने वाला आचार्य पं० श्रीराम शर्मा का दर्शन जिसे "वैज्ञानिक अध्यात्मवाद" के नाम से जाना जाता है। इस युग निर्माण मिशन का एक अन्य आधार है। अध्यात्म को विज्ञान के रूप में प्रस्तुत करने के लिए उन्होने ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना की। उनका कहना है कि भौतिकता का वरण आज की आवश्यकता प्रतीत होती होती है तो उसका आधार अध्यात्म हो।

- युगनिर्माण मिशन का युग परिवर्तन हेतु प्रयास अर्थात् उसकी प्रकियाँ –

जनमानस का परिष्कार, नवसमाज का निर्माण एक महाभारत है। इस महाभारत में विजय प्राप्त करने के लिए युग निर्माण मिशन ने अपनी कार्य पद्धति को 3 भागों में प्रस्तुत किया तथा समाज के नवनिर्माण के प्रयास हेतु इन पद्धतियों को अपनाया जिन्हें निम्नलिखित नाम से जाना जाता है –

1. प्रचारात्मक अभियान
2. रचनात्मक अभियान
3. सुधारात्मक– संघर्षात्मक अभियान

प्रचारात्मक अभियान द्वारा भावनात्मक नवनिर्माण के लिए झोला पुस्तकालय, युगसंगीत, टेपरिकार्डर, स्लाइड प्रोजेक्टर, ज्ञान रथ, गायत्री और यज्ञ, सेमीनार आदि का उपयोग लोक शिक्षण के लिए किया गया।

रचनात्मक अभियान के कार्यकमों ने प्रौढ़–पाठशालाएँ, महिला विद्यालय, बाल संस्कार शालाएं, फूल–शाक और फल उत्पाद, स्वच्छता अभियान, गौ–संवर्धन, सहकारी आंदोलन, प्रदर्शनियों एवं मेलों का अभिनव स्वरूप प्रदान करना, वाचनालयों–पुस्तकालयों की स्थापना, कुटीर उद्योग, वृक्षारोपण जैसे कार्यकम किये जा रहे हैं।

सुधारात्मक– संघर्षात्मक अभियान के कार्यकमों में अवांछनीयता, अनैतिकता, अंधविश्वास आदि का उन्मूलन करना है। आचार्य पं० श्रीराम शर्मा संघर्षात्मक अभियान की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहते है, " समझाने से भले आदमी मान जाते हैं, पर दुष्टता और मूर्खता को समाप्त करने हेतु संघर्ष की आवश्यकता होती है। असहयोग, विरोध प्रदर्शन, सत्याग्रह, घेराव, कानूनी कार्यवाही आदि माध्यम से अनैतिकता, अनाचार, भृष्टाचार, अपराध, धूर्तता, दुष्टता, बेईमानी, शोषण, अंधविश्वास आदि अनेक स्तर की अनेक रूपों की बुराइयों के लिए संघर्षात्मक अभियान चलाना पड़ता हैं।"

उपरोक्त अभियान युगनिर्माण मिशन द्वारा नवसमाज के निर्माण में किये जा रहे है।

युग निर्माण अभियान के इन त्रिविध अभियान कार्यकमों को आज सप्तकांति या सप्त आन्दोलन के रूप में जाना जाता है, यह सप्त कांतियाँ निम्न लिखित हैं–

1. साधना
2. स्वास्थ्य
3. शिक्षा
4. स्वालम्बन
5. पर्यावरण
6. नारी जागरण
7. व्यसन कुरीति–उन्मूलन

उपरोक्त आन्दोलन समाज की परिस्थिति के अनुरूप व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण एवं समाज निर्माण की प्रकिया को पूर्ण करने हेतु स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन एवं सभ्य समाज के लक्ष्य की पूर्ति अर्थात् मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण – सतयुग की वापसी हेतु युगनिर्माण मिशन द्वारा संचालित हो रहे है।

- युग निर्माण मिशन की उपलब्धियां–

युगनिर्माण मिशन को अपने बीजारोपण से लेकर आज तक जो उपलब्धियां प्राप्त हुई, उससे कहा जा सकता की समाज की संरचना में परिवर्तन का आरम्भ सकारात्मक दिशा में होना आरम्भ हो गया है। युग निर्माण मिशन द्वारा 50 करोड़ से अधिक लोगों का गायत्री मंत्र से दीक्षित होना, 1 करोड़ 3 माह से 1 वर्ष समय के लिए समर्पित कार्यकर्ता, 27 अश्वमेध यज्ञों, 108 संस्कार महोत्सव यज्ञों द्वारा जनजागरण तथा अश्वमेध की महापूर्णाहुति 'युग संधि महापुरश्चरण' में 2.5 से 3 करोड़ लोगों की भागीदारी होना – एक सामूहिक चेतना के जागरण का अनुठा आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक प्रयोग को सफलता पूर्वक सम्पन्न करना, पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में सफलता, 15 मिलियन से अधिक लोगों की बुरी आदतों एवं एडीक्शन को छुड़वाने में सफलता प्राप्त करना तथा लाखों परिवार को एक आध्यात्मिक दिनचर्या प्रदान कराना। स्वास्थ्य निर्माण के लिए एक औषधि चिकित्सा पद्धति का निर्माण एवं शोध संस्थान द्वारा 500 से अधिक औषधीय पौधों को एकत्र करना तथा उनके औषधीय गुणों से जनता को परिचित कराना, युग निर्माण के लिए 4000 से अधिक केन्द्रों गायत्री शक्ति पीठों, प्रज्ञा पीठों के रूप में निर्माण, 24000 से अधिक प्रज्ञामण्डलों, महिला मण्डलों का जनजागरण के लिए प्रयोग तथा स्वावलंबी एवं विद्याविस्तार के लिए देव संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना तथा वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के प्रतिपादन हेतु ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना तथा उसके द्वारा प्राप्त परिणामों से अध्यात्म को नवीन दिशा प्रदान करना।

➢ जीवन शैली (Life Style):-

मनुष्य जीवन भगवान की अनुपम कलाकृति है। उसमें चेतना के उत्कर्ष एवं विकास की अपार संभावनाएँ सन्निहित हैं। मनुष्य जीवन पशुत्व एवं देवत्व का सेतु है। वह जब अपनी शक्ति "विचारशीलता" को सात्विक बना लेता हैं तो वह देवत्व को प्राप्त करता ह तथा "विचारशीलता" को तामसिक या निम्न बना लेता है तो पशुत्व को प्राप्त कर लेता हैं।

जीवन शैली दो शब्दो से मिलकर बना हैं – जीवन और शैली ।

जीवन शब्द का तात्पर्य है – " जन्म और मृत्यु के बीच का काल या जीवित रहने का भाव तथा शैली शब्द का अर्थ हैं – चाल, ढंग , प्रणाली , तरीका ।

अर्थात् जीवन शैली से तात्पर्य हैं – जीवन जीने का ढंग या तरीका ।

मनुष्य का जीवन अन्य जीवों से भिन्न होता हैं , इसलिये उसे इस धरती का राजकुमार कहॉ गया है। जीवन शैली जीने का एक तरीका है । जीवन जीने के विभिन्न तरीके हो सकते है , पर प्रत्येक में चिंतन, चरित्र, एवं व्यवहार सम्मिलित होते हैं।

मनुष्य का कल्याण श्रेष्ठ जीवन में हैं। यदि वह मानवता और सभ्यता को चेतना के उच्चतम शिखर पर देखना चाहता है तो उसे चेतना के मूल्यों को जीवन के क्षितिज पर प्रकाशित करना होगा जिसके निर्माणकारी तत्व संसार में फैले हुएँ हैं और जिनकी जड़े शाश्वत

हैं। अर्थात् उसे श्रेष्ठ जीवन के लिये श्रेष्ठ जीवन शैली को अपनाना होगा । प्रसन्नता , आनंद व संतोष जिससे प्राप्त होते है वही श्रेष्ठ जीवन शैली होती है। मनुष्य जीवन आत्मिक एवं भौतिक दो प्रकार से होता हैं। इनके पोषण एवं विकास के लिये उसे कुछ आवश्यकताएँ होती हैं। आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे कुछ कर्म करने होते है उनके कम, व्यवस्था एवं रीति–नीति जीवन शैली कहलाती है।

आहार–विहार, आचार–विचार, रहन–सहन यह सब मिलकर जीवन शैली का निर्माण करते हैं। आहार –विहार मनुष्य के स्वास्थ्य को निर्धारित करता हैं। आहार जीवन की आवश्यकता है और यह आवश्यकता नैसर्गिक है , इसलिये यहाँ जानने कि आवश्यकता हैं कि क्या खाएँ, कब खाएँ और कैसे खाएँ? इन सवालो को जानने वाले स्वस्थ एवं प्रसन्न रहते हैं । ऋतुओं के अनुसार आहार निर्धारित होते हैं , तो संस्कृति के अनुसार वस्त्र –वेश विन्यास । आसपास का वातावरण तथा उसका जीवन के प्रति दृष्टिकोण जीवन शैली हैं। विचार हमारे जीवन का आधार हैं, जैसे हमारे विचार होते है वैसा ही हमारा जीवन होता है।

आचार्य जी ने बिना जातीय भेद–भाव, धर्म, लिंग तथा सामाजिक, आर्थिक स्तर के युग निर्माण योजना का सूत्रपात किया तथा इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु आध्यात्मिक व बौद्विक परिमार्जन के लिए विचार कांति अभियान व साधनात्मक जीवन शैली को आरंभ किया ।

पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने युग परिवर्तन करने हेतु अर्थात् मनुष्य में देवत्व के उदय तथा धरती पर स्वर्ग के अवतरण के उद्देश्य की पूर्ति हेतु युग निर्माण सत्संकल्पों का सूत्रपात किया। जो उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला है।

अतः 18 सत्संकल्पो का प्रमुख उद्देश्य मनुष्य के चरित्र, चिंतन, व्यवहार को परिमार्जित कर उन्हे उत्कृष्ठ बनाना है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से मनुष्य के संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा व्यवहारात्मक परिवर्तन तथा परिमार्जन होने पर व्यक्ति में धनात्मक मूल्यों एवं जीवनशैली का निर्माण होता हैं तथा व्यक्ति की स्वयं के प्रति व दूसरो के प्रति धनात्मक या ऋणात्मक अभिव्यक्ति ही व्यक्तित्व निर्माण के लिये जिम्मेदार होती हैं। मनुष्य समाज की ईकाई है अतः यदि व्यक्तित्व निर्माण उत्कृष्ठ होगा तो युगनिर्माण भी उत्कृष्ठ होगा ।

मनुष्य की चेतना का विकास मनुष्य में देवत्व उदय का द्योतक है , अर्थात् चेतना परिमार्जन तथा सामंजस्य पूर्ण समाज की स्थापना युगनिर्माण मिशन का प्रमुख उद्देश्य है।

डॉ0 प्रणर्व पण्डया (2002) के अनुसार, एक आदर्श जीवन पद्धति इस प्रकार है– "जल्दी शयन, प्रातः जागरण, प्रातः भ्रमण, दैनिक यज्ञ, नियमित जप, शुद्ध आचार. सात्विक आहार, श्रेष्ठ चिन्तन और परोपकार की वृत्ति– इसे आदर्श जीवन पद्धति कहते है।"

युग निर्माण अभियान का सत्संकल्प–

1. हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
2. शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्म–संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
3. मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाये रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था बनाये रखेगें।
4. इन्द्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत् अभ्यास करेंगे।
5. अपने आपको समाज का अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
6. मर्यादाओं को पालेंगे व वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
7. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का अभिन्न अंग मानेंगे।
8. चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
9. अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
10. मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं और विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों को मानेंगे।
11. दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे जो हमें अपने लिए पसंद नहीं है।

12. नर–नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
13. संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरूषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
14. परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्व देंगे।
15. सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नव सृजन की गतिविधियों में पूरी रूचि लेंगे।
16. राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव नहीं बरतेंगे।
17. मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है, इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
18. "हम बदलेंगे–युग बदलेगा, हम सुधरेंगे– युग सुधरेगा" इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा के अनुसार, "जीवन की समस्याओं को सुलझाने एवं वांछित उपलब्धियों से जीवन को विभूषित करने के लिए अपने व्यक्तित्व को स्वच्छ, सुथरा बनाने की कला का नाम ही जीवन जीने की कला है। इसे व्यवहारिक जीवन में उतारने का नाम ही जीवन साधना है। साधना एक ऐसी प्रकिया है जिसे ठीक ढंग से यदि संपन्न किया जाये तो कुरूप से कुरूप चीज सुन्दरतम् बन जाती है।

जीवन की सुव्यवस्था जहाँ उसे आकर्षक एवं गौरवपूर्ण बनाती है वहीं अस्तव्यस्तता उसे कुरूप और हानिकारक बना देती है। मशीन के पुर्जे ठीक प्रकार कॅसे हुए नहीं है तो वह सुन्दर भी न दिखेगी तथा उपयोगिता तो समाप्त होती जायेगी, चारों ओर कुड़ा – कबाड़ा सा फैला दिखाई देगा। मनुष्य का व्यक्तित्व भी इसी तरह उपयोगी अथवा अनुपयोगी बनता रहता है।

युग निर्माण का प्रारम्भ व्यक्ति से होता है। युग निर्माण मिशन का नारा है– "हम बदलेंगे–युग बदलेंगा", "हम सुधरेंगे –युग सुधरेंगा" आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा इस संदर्भ में कहते है –" युग परिवर्तन का अर्थ है, व्यक्ति परिवर्तन और यह महान प्रकिया अपने से प्रारम्भ होकर दूसरों पर प्रतिध्वनित होती है अर्थात् इसका सामूहिक रूप सामने आता है।"

आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा के द्वारा प्रतिपादित युग निर्माण सत्संकल्प के 18 सूत्रों का उद्देश्य मनुष्य में देवत्व का अवतरण है। देवत्व के अवतरण अर्थात् व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में उसकी जीवन शैली का बहुत बड़ा योगदान होता है। जीवन शैली के आयाम व्यक्ति के विचारों, भावनाओं एवं व्यवहार से संबंधित होते है।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि जीवन शैली में तीन आयामों का समावेश किया जा सकता हैं–

- संज्ञानात्मक
- भावनात्मक
- व्यवहारात्मक

इन्हीं आयामों के आधार पर शोधकार्य हेतु प्रश्नावली का निर्माण किया जायेगा।

❖ मूल्य

हम समाज में रहते हैं। समाज में मूल्य निर्धारित होते हैं, मूल्यों के अनुरुप हम जीवन जीते हैं। मूल्य हमें एक साथ वैयक्तिक प्रत्यक्षण, प्रेरणा, चुनाव और प्रतिकिया आदि से जोड़ता हैं । मूल्य हमें संस्कृति , विज्ञान , धर्म , और जीवन के अनुभवों से प्राप्त होते हैं। समष्टिगत मानवीय मूल्य जैसे –सत्य, शांति , कर्तव्य , ज्ञान आदि ।
मूल्यों को मुख्यतः दो भागों में विभक्त किया जा सकता हैं।

➢ व्यक्तिगत प्राथमिकता

➢ वस्तुनिष्ठ सिद्धांत

ये दोनो नैतिक पैमाने दोनो धूरियों में एक दूसरे से विपरीत होते हैं।

वे मूल्य जो प्राथमिकता से संबंधित हैं, उनमें व्यक्तिगत रुचियाँ आती हैं– जैसे चाय या कॉफी , लंबे या छोटे बाल आदि जो व्यक्तिपरक होते हैं और जो परिवर्तन के लिये उत्तरदायी हैं।दूसरी तरफ वे मूल्य जो सिद्धांत हैं , जैसे ईमानदारी, दया जो स्थिर हैं, सार्वभौमिक हैं ,वस्तुनिष्ठ हैं, संस्कृति से परे हैं।

जो मूल्यकेंद्रित जीवन जीते हैं उनकी मदद मूल्य कैसे करते हैं ? यह जानना आवश्यक है । यदि हमारा जीवन सार्वभौमिक मूल्यों पर निर्भर ना हों परंतु बाहरी कारको जैसे धन, शक्ति, खुशी व प्रसिद्धि पर हो तो कभी ना कभी मायाजाल से मुक्ति, दुःखी स्थिति से संबंधित होगा । मूल्यकेंद्रित जीवन एक आंतरिक निर्देशन तंत्र प्रदान करता हैं जिससे सार्वभौमिक सिद्धांतों के द्वारा सही रुचि बना सकते हैं जो अपरिवर्तनीय हैं।

मूल्य केंद्रित जीवन हमें सच्चा आत्मविश्वास देता हैं। धन, मकान, व्यवसाय जैसी बदलाव वाली वास्तविकता की अपेक्षा मूल्यों पर आधरित जीवन जीने से आंतरिक शक्ति आती हैं। मूल्य केंद्रित जीवन व्यक्ति को पूर्णता व बुद्धि प्रदान करता हैं।

जर्मन दर्शन शास्त्री फ्रेडरिक नित्से का कथन है – मूल्य कोई किया नहीं बल्कि यह नैतिक विश्वासो और सामाजिक दृष्टिकोणो का बहुवचनात्मक अर्थ हैं।

क्लुखान (1994) के अनुसार :–

मूल्य एक धारणा या विचार हैं जो किसी व्यक्ति या समूह में आंतरिक या बाह्य वांछित गुण होता हैं जो चुनाव करने में , उपयुक्त लक्ष्य तक पहुचने में हमें प्रभावित करते हैं।

मेक्सबेबर मूल्य को परिभाषित करते हुये कहते हैं –यह तथ्यो का मैटर है जिसको अचेतन रुप से व्यक्ति ग्रहण कर लेता है ओर आधुनिक समाज को नैतिकता तथा शब्दकोष में बिना किसी विरोध के अपना लेता हैं ।

स्क्वाट्ज (1994):– इन्होने मूल्य को निम्न तरीके से परिभाषित किया ।

- ➢ मूल्य संज्ञानात्मक संरचना होते हैं। जो सामाजिक अस्तित्व में रुचियाँ प्रदान करते हैं।
- ➢ मूल्य किसी भी कार्य के निर्णय के लिये उसके स्पष्टीकरण के लिये मानक के रुप में कार्य करते हैं।
- ➢ मूल्य किसी समूह में या संगठन में सामाजीकरण द्वारा तथा व्यक्ति के अनुभवो से सीखना दोनो के द्वारा प्राप्त किये जाते हैं।
- ➢ मूल्य उन कार्यो को प्रेरित करता है जो मुख्य रुप से किसी भी कार्य में दिशा और संवेगात्मक घनत्व को प्रदान करता हैं।

रेन्नर (2003)के अनुसार :–

मूल्य हमारे जीवन में प्रेरणाओं को दिशा प्रदान करता है यह संज्ञानात्मक ढॉचे होते हैं जो कि जीवन के लक्ष्यो, सिद्धांतो और व्यवहारारत्मक प्राथमिकताओं को वर्णित करता हैं।

- मानव जीवन में मूल्यों की भूमिका –

मानवीय मूल्य ही जीवन के सशक्त आधार है। इनमें जीवन को समुन्नत और उच्चतम शिखर पर पहुचाने का अद्भूत सामर्थ्य है। मानव मूल्य जीवन में व्यष्टि से समष्टि तक की यात्रा को सरल एवं सफल बनाते है। जीवन में पूर्ण शांति एवं आनन्द का समावेश करने के लिए जीवनमूल्यों की स्थापना जरूरी है।

ये मूल्य–

1. व्यवहारों को दिशा प्रदान करते हैं।
2. जीवन को श्रेष्ठता प्रदान करते हैं।
3. सामुदायिक कल्याण की भूमिका निभाते हैं।
4. नेतृत्व कौशल प्रदान करते हैं।
5. व्यक्ति को तुलनात्मक दृष्टि से महत्व प्रदान करते हैं।

6. अभिव्यक्ति कौशल प्रदान करते हैं ।
7. आदर सम्मान के लिए मानदण्ड बनते हैं।
8. विश्वसनीयता प्रदान करते हैं।
9. मनोविकारों से जूझने की शक्ति प्रदान करते हैं।
10. साध्य मूल्यों को प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं।
11. कर्तव्य निष्ठा के प्रति उमंग और उत्साह पैदा करते हैं।
12. व्यक्ति को अभिप्रेरण के योग्य बनाते हैं।
13. आत्मश्लाघा को शांत करते हैं।
14. जीवन दर्शन को समझने का आधार बनते हैं।
15. दूसरों को प्रभावित करने के अचूक साधन बनते हैं।
16. नैतिक चिंतन की बुनियाद जमाते हैं।

मानवीय मूल्यों के अनेक प्रकार है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त मापनी व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली के निर्माता डॉ० जी० पी० शैरी एवं डॉ० आर० पी० वर्मा ने विभिन्न मूल्यों का मूल्यांकन कर मूल्य को मुख्य रुप से 10 प्रकार से बताया तथा उन्हें निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया--

1. धार्मिक मूल्य – यह मूल्य भगवान पर विश्वास, उसे समझने के प्रयास, दैवीय शक्ति का डर और धार्मिक ग्रंथों में दिये गये नैतिक चिन्हों के अनुसार चलना आदि से परिभाषित किया गया है। बाह्य व्यवहार के रूप में इस मूल्य को इस रूप में देखा जा सकता है जैसे– किसी तीर्थ यात्रा पर जाना, साधारण जीवन व्यतीत करना, धार्मिक संतों, महात्माओं पर विश्वास करना, भगवान की पूजा करना व सच बोलना।
2. सामाजिक मूल्य– इस मूल्य को कृपा, दयालुता, प्यार, सहानुभूति (लोगों के प्रति), लोगों की सेवा कर ईश्वर की सेवा करने का प्रयास, व्यक्तिगत आराम का परित्याग और आवश्यक तथा दुर्गति से पीड़ित के लिए प्राप्त करना के द्वारा इस मूल्य को परिभाषित किया गया है।
3. लोकतांत्रिक मूल्य– यह मूल्य नागरिकता के प्रति आदर, लिंग, भाषा, धर्म, जाति, रंग, और पारिवारिक स्तर आदि के द्वारा व्यक्तियों में विभेद ना हो, सभी के लिए समान, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक अधिकार हो, पक्षपात न हो, सामाजिक न्याय हो और प्रजातंत्र संस्थानों के प्रति आदर हो आदि के द्वारा इस मूल्य को परिभाषित किया जाता है।
4. आर्थिक मूल्य– यह मूल्य धन तथा सम्पत्ति प्राप्त करने से संबंधित है। जिस व्यक्ति का उच्च आर्थिक मूल्य होता है वह उसके जॉब की च्वाइस में प्राप्त सम्पत्ति और धन को पुरूस्कारों के द्वारा निर्देशित होता है। उसका दृष्टिकोण धनवान व्यक्तियों और उद्योगपतियों के अनुकूल होता है ओर वह उन्हें देश की प्रगति के लिए मददगार समझता है।
5. सौन्दर्य : ललित कला मूल्य – इस मूल्य को इस तरह से परिभाषित किया जाता है कि जिसमें सौन्दर्य का वर्णन हो, सौन्दर्य व्यवहार अनुपात और अनुरूपता हो, जिसमें फॉइन आर्ट के लिए, ड्राइंग, पैन्टींग, संगीत, नृत्य, कविता, शिल्पकला और मूर्तिकला के प्रति प्यार हो, साहित्य के प्रति प्यार हो, घर की सजावट के प्रति प्यार हो, वस्तुओं को व्यवस्थित रूप से साफ–सुथरे ढ़ंग से रखने के प्रति प्यार हो, वही मूल्य सौन्दर्य ललित कला मूल्य है।
6. ज्ञान मूल्य : यह मूल्य किसी भी किया के सैद्धांतिक नियमों के ज्ञान के प्रति प्यार और सच को खोजने के प्रति सत्य से संबंधित है। ज्ञान मूल्य के संबंध में माना जाता है कि ज्ञान मूल्य से परिपूर्ण व्यक्ति को किसी भी कार्य में सफलता की आवश्यकता के लिए सैद्धांतिक नियमों का ज्ञान होता है। वह अपने कार्य में कड़ी मेहनत करता है। यदि वह अध्ययन उसकी योग्यता बढ़ाने, नये तथ्य खोजने और संबंध खोजने में मदद करता है उसे ही ज्ञान का खोजी कहा जाता है। उसके लिए ज्ञान ही सबसे बड़ा गुण है।

7. आनन्द मूल्य – इसे इस तरह परिभाषित किया जाता है, यह वह धारणा है जिसमें खुशी से प्यार की तथा पीड़ाओं के प्रति नकारने की इच्छा रहती है। आनन्दजीवी के लिए भविष्य की अपेक्षा वर्तमान महत्वपूर्ण होता है। आनन्दजीवी इन्द्रियों की खुशी में संलग्न रहता है और दुःख भुला देता है।
8. शक्ति मूल्य – वह धारणा जिसमें दूसरों पर शासन करने की इच्छा हो और दूसरों का नेतृत्व करने की इच्छा हो। जो व्यक्ति उच्च शक्ति मूल्य वाला होता है, वह ऐसी जॉब लेने को प्राथमिकता देता है जिसमें वह ऐसा अधिकारी हो, जो दूसरों पर शासन कर सकें। वह बड़े स्थान पर शासन करने के बजाय छोटे स्थान पर शासन करने को प्राथमिकता देता है, उसको भगवान के डर के बजाय देश के कानूनों का डर ज्यादा होता है जिससे वह गलत तरीकों से धन कम बनाता है। वह स्टेटस कॅन्सियस होता है और यहाँ तक वह अपनी पोजिशन को बनाये रखने के लिए असत्य भी बोल सकता है।
9. पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य– यह वह धारणा है जिसमें कुछ इस तरह के व्यवहारों, भूमिकाओं, कार्यों और संबंधों की इच्छा होती है जिससे की किसी व्यक्ति का पारिवारिक स्तर बनता है। यह उन भूमिकाओं के प्रति आदर प्रस्तुत करता है जो कि भारतीय समाज में परंपरागत विशेषता लिए हुए विभिन्न जातियों में होते हैं। यह मूल्य परिवार को परंपरागत संस्थान में पवित्र ग्रंथ में रखे गये कंजरवेटिव आउटलुक का सम्मान करता है।
10. स्वास्थ्य मूल्य – सामान्य कार्य व कर्तव्य पूर्ण करने के लिए शरीर को सही स्थिति में रखना इस मूल्य के अंतर्गत आता है। यह आत्म–रक्षा के अंतर्गत आता है। एक व्यक्ति स्वास्थ्य मूल्य वाला यह महसूस करता है कि किसी भी तरह की लापरवाही का कार्य उसके स्वास्थ्य में कमी ला सकता है, अपनी योग्यताओं के विकास और प्रयोग के लिए शारीरिक स्वास्थ्य को बहुत महत्वपूर्ण मानता है।

• शोध परिकल्पनाएँ –

1. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों के बीच उनकी जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. . युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों के बीच उनकी जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों की महिलाओं एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों की महिलाओं के बीच उनकी जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों के बीच उनके लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. . युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों के बीच उनके धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों के बीच उनके सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों के बीच उनके सौन्दर्यः ललित कला मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

8. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों के बीच उनके आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों के बीच उनके ज्ञान मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
10. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों के बीच उनके आनन्द मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
11. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों के बीच शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
12. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों के बीच उनके पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
13. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों के बीच उनके स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
14. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों के बीच उनके लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
15.. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों के बीच उनके धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
16. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों के बीच उनके सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
17. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों के बीच उनके सौन्दर्य: ललित कला मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
18. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों के बीच उनके आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
19. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों के बीच उनके ज्ञान मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
20. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों के बीच उनके आनन्द मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
21. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों के बीच शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
22. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों के बीच उनके पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

23. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों के बीच उनके स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
24. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओ के बीच उनके लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
25.. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों कें महिलाओं एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं के बीच उनके धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
26. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं के बीच उनके सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
27. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं के बीच उनके सौन्दर्यः ललित कला मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
28. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं के बीच उनके आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
29. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं के बीच उनके ज्ञान मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
30. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं के बीच उनके आनन्द मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
31. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं के बीच शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
32. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं के बीच उनके पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
33. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं के बीच उनके स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
34. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) के बीच उनकी जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
35.. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह A) के बीच उनकी जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
36. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों की महिलाओं (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों की महिलाओं (समूह A) के बीच उनकी जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
37. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) के बीच उनके लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
38.. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) के बीच उनके धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

39. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) के बीच उनके सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
40. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) के बीच उनके सौन्दर्य: ललित कला मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
41. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) के बीच उनके आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
42. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) के बीच उनके ज्ञान मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
43. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) के बीच उनके आनन्द मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
44. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) के बीच शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
45. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) के बीच उनके पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
46. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह A) के बीच उनके स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
47. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह A) के बीच उनके लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
48. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह A) के बीच उनके धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
49. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह A) के बीच उनके सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
50. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह A) के बीच उनके सौन्दर्य: ललित कला मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
51. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह A) के बीच उनके आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
52. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह A) के बीच उनके ज्ञान मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

53. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह A) के बीच उनके आनन्द मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

54. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह A) के बीच शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

55. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह A) के बीच उनके पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

56. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह A) के बीच उनके स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

57. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओ (समूह A) के बीच उनके लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

58.. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों कें महिलाओं (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह A) के बीच उनके धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

59. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह A) के बीच उनके सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

60. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह A) के बीच उनके सौन्दर्यः ललित कला मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

61. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह A) के बीच उनके आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

62. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह A) के बीच उनके ज्ञान मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

63. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह A) के बीच उनके आनन्द मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

64. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह A) के बीच शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

65. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह A) के बीच उनके पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

66. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह A) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह A) के बीच उनके स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

67. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) के बीच उनकी जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

68. . युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह B) के बीच उनकी जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

69. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों की महिलाओं (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों की महिलाओं (समूह B) के बीच उनकी जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

70. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) के बीच उनके लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

71. . युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) के बीच उनके धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

72. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) के बीच उनके सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

73. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) के बीच उनके सौन्दर्यः ललित कला मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

74. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) के बीच उनके आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

75. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) के बीच उनके ज्ञान मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

76. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) के बीच उनके आनन्द मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

77. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) के बीच शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

78. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) के बीच उनके पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

79. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह B) के बीच उनके स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

80. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह B) के बीच उनके लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

81.. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह B) के बीच उनके धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

82. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह B) के बीच उनके सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

83. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह B) के बीच उनके सौन्दर्यः ललित कला मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

84. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह B) के बीच उनके आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

85. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह B) के बीच उनके ज्ञान मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

86. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह B) के बीच उनके आनन्द मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

87. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह B) के बीच शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

88. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह B) के बीच उनके पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

89. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह B) के बीच उनके स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

90. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओ (समूह B) के बीच उनके लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

91.. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों कें महिलाओं (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह B) के बीच उनके धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

92. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह B) के बीच उनके सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

93. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह B) के बीच उनके सौन्दर्यः ललित कला मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

94. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह B) के बीच उनके आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

95. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह B) के बीच उनके ज्ञान मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

96. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह B) के बीच उनके आनन्द मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

97. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह B) के बीच शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

98. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह B) के बीच उनके पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

99. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह B) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह B) के बीच उनके स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

100. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) के बीच उनकी जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

101. . युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह C) के बीच उनकी जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

102. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों की महिलाओं (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों की महिलाओं (समूह C) के बीच उनकी जीवनशैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

103. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) के बीच उनके लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

104. . युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) के बीच उनके धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

105. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) के बीच उनके सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

106. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) के बीच उनके सौन्दर्यः ललित कला मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

107. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) के बीच उनके आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

108. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) के बीच उनके ज्ञान मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

109. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) के बीच उनके आनन्द मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

110. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) के बीच शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

111. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) के बीच उनके पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

112. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के व्यक्तियों (समूह C) के बीच उनके स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

113. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह C) के बीच उनके लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

114. . युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह C) के बीच उनके धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

115. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह C) के बीच उनके सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

116. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह C) के बीच उनके सौन्दर्यः ललित कला मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

117. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह C) के बीच उनके आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

118. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह C) के बीच उनके ज्ञान मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

119. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह C) के बीच उनके आनन्द मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

120. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह C) के बीच शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

121. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह C) के बीच उनके पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

122. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के पुरुषों (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के पुरुषों (समूह C) के बीच उनके स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

123. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओ (समूह C) के बीच उनके लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

124. . युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों कें महिलाओं (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह C) के बीच उनके धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

125. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह C) के बीच उनके सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

126. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह C) के बीच उनके सौन्दर्य: ललित कला मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

127. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह C) के बीच उनके आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

128. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह C) के बीच उनके ज्ञान मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

129. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह C) के बीच उनके आनन्द मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

130. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह C) के बीच शक्ति मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

131. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह C) के बीच उनके पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

132. युग निर्माण मिशन के कार्यक्षेत्र में आने वाले ग्रामों के महिलाओं (समूह C) एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों से रहित ग्रामों के महिलाओं (समूह C) के बीच उनके स्वास्थ्य मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

• अनुसंधान विधि–

• प्रतिचयन विधि–

प्रस्तुत शोधाध्ययन में यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा पूर्व संयुक्त मध्यप्रदेश (म. प्र. एवं छत्तीसगढ़) प्रांत के विभिन्न ग्रामों में से किन्हीं 2 ग्रामों का चयन करेंगे, जहाँ युग निर्माण मिशन कार्यरत है तथा कोटा प्रतिचयन विधि से दो ग्रामों का चयन करेंगे जहाँ युग निर्माण मिशन कार्यरत नहीं है।

शोधाध्ययन के लिए प्रयोज्यों का चयन कोटा प्रतिचयन विधि द्वारा करेंगे तथा प्रतिदर्श 600 का होगा, जिसे तीन आयु समूह वर्गो, समूह – **A** (15 – 25 वर्ष), समूह – **B** (26 – 35 वर्ष) एवं समूह – **C** (36 – 45 वर्ष) में विभाजित कर अध्ययन करेंगे। जो निम्न प्रकार से होगा –

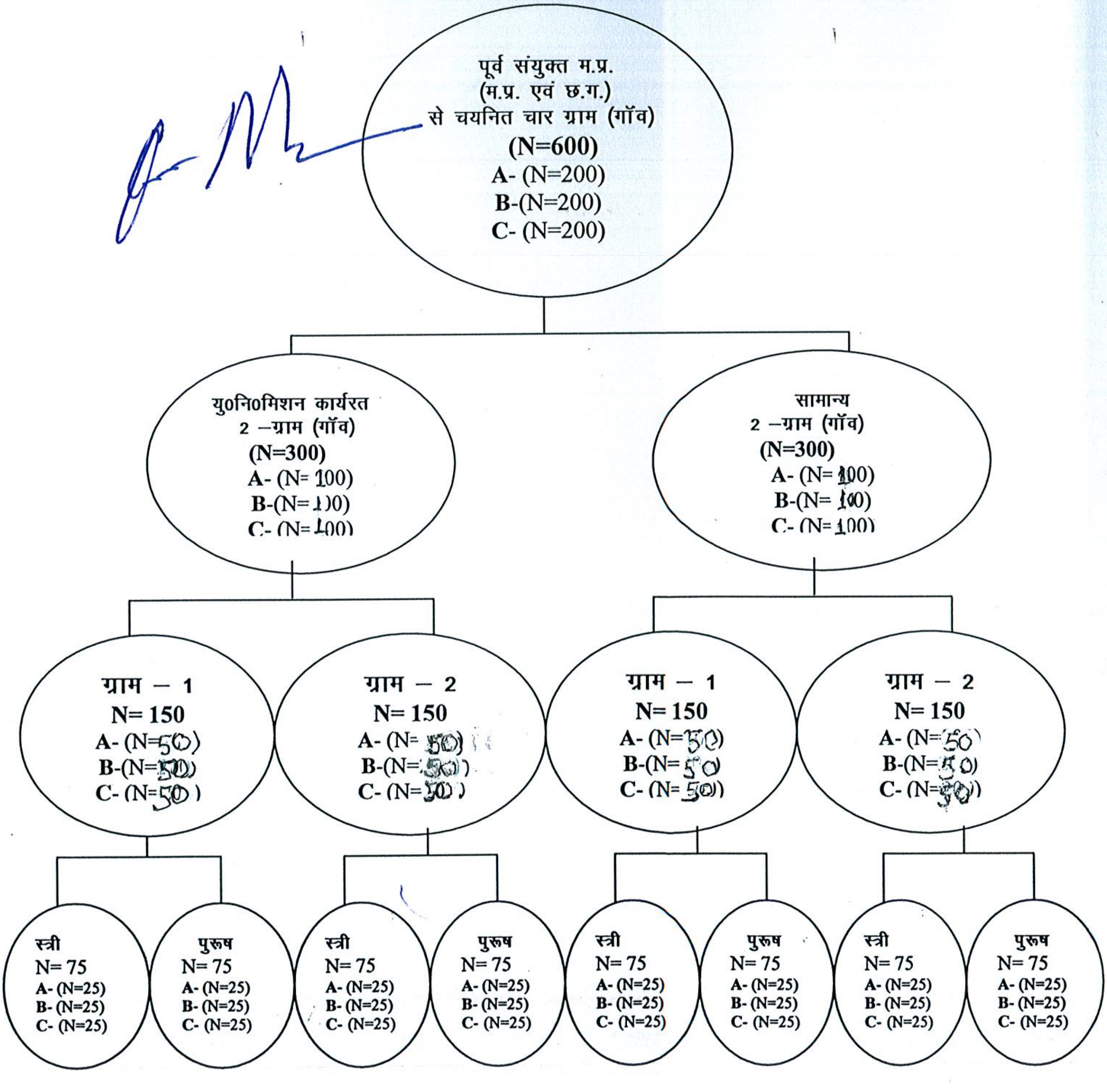

- **प्रयुक्त उपकरण–**

- Personal Values Questionnaire -

  Developed by Dr. G.P. Sherry & Prof. R.P. Verma

- Life Style (जीवन शैली) के मापन हेंतु -

  आचार्य पं० श्रीराम शर्मा के द्वारा प्रतिपादित युग निर्माण सत्संकल्प के 18 सूत्रों का उद्देश्य मनुष्य में देवत्व का अवतरण है। देवत्व के अवतरण अर्थात् व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में उसकी जीवन शैली का बहुत बड़ा योगदान होता है। जीवन शैली के आयाम व्यक्ति के विचारों, भावनाओं एवं व्यवहार से संबंधित होते है। युग निर्माण मिशन के 18 सत्संकल्पों एवं 100 सूत्री कार्यक्रम के आधार पर जीवन शैली के मापन हेतु उपयुक्त परीक्षण का निर्माण किया जायेगा। जिसकी रूपरेखा इस प्रकार हैं–

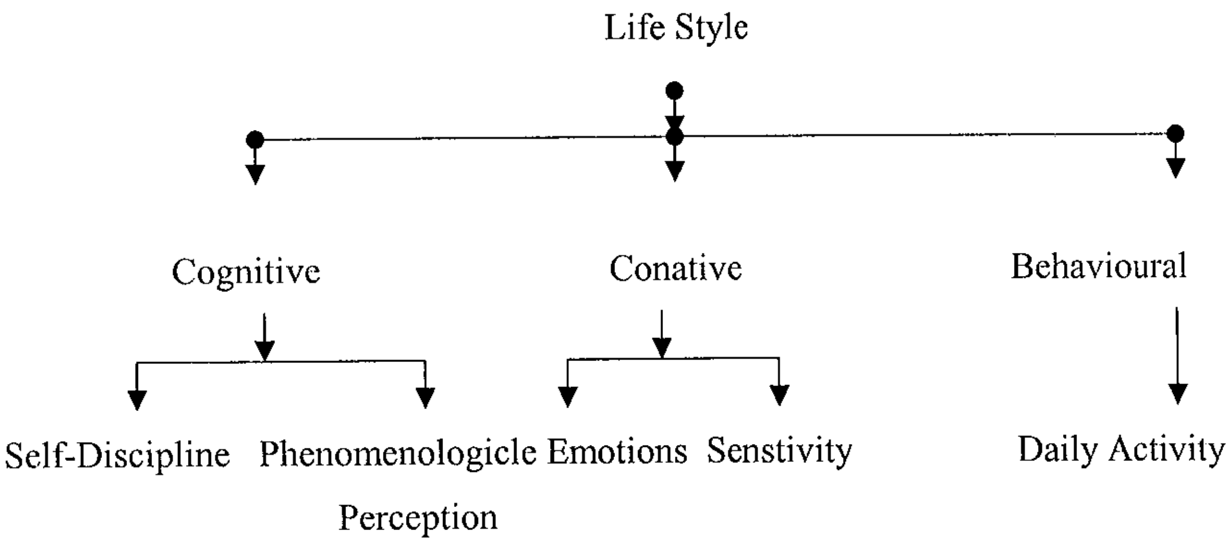

- **सांख्यिकीय विश्लेषण–**

परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया जायेगा।

Reference

1. Annemien Haveman- Nies, Lisette (C.) P.G.M. de Groot, Jan Burema, Jose A. Amorim Cruz, Merete Osler and Wija A. van staveren (2002); Dietary Quality and Life Style Factors in Relation to 10-Year Older Europeans The SENECA Study, Am J Epidemiol; 156:962-968.
2. Bharadwaj R.L.(1999); Development of a value conflict measure cited in Indian journal of psychology and education, vol. 30 July 1999.
3. Chauhan N.S.(1994); Value vector matrix study of perception and aspiration contained in the prithvi suktam of athraveda; praachi journal of psycho cultural dimensions, vol.10 (1&2).
4. Gerlach & Hine (2004) - The Importance of a Spiritual Movement- http://www.campuscrusadeforchrist.com/grow/nltc/ls01tn.pdf.
5. Kaeng W. Lee, Gregory Y.H.Lip (2003)- Effect Of Life Style On Hemostasois, Febrinolysis, and Platelet Reactivity, Arch Intetn Med. 2003; 163:2368-2392.
6. Kumar Alok(1997) – Impact of Yug nirman movement – a sociological study, Unpublished project work, dept. of sociology, Meerut University Meerut.
7. Kumble G.N. et.al (1999)- Generation gap masculinity, feminity, sex and personal values; Prachi Journal of psycho cultural dimension, april 1999, vol. 15, No.-1.
8. Mathur M., Chauhan N.S., Aurora Saroj, and Shakti Hira (1989); Value oriented in alienated youth: praachi journal of psycho cultural dimensions, Vol- v, no.-1, 37-46
9. Mathur Preeti (2001); Employment as determinant of psychological needs and values of unmarried females; psycholingua, vol 31, no.2.
10. Mathur Preeti and Bharti (2001); Employment as determinant of psychological needs and values of unmarried females; Psycholingua, Vol. 31, No. 2.
11. Mishra Mridula and Sinha Rajesh Kumar (2001)- Effects of Yogic Practices on Depression and Anxiety, Journal of Praojective Psychology and Mental Health, 2001, 8 (1), 23-27
12. Parasar R.P. (2002); Life Style for Perfect Health, Psychological Studies, 2000, 45 (3), 167-172
13. Rekha S.(1995); National integration through value oriented activities psycholingua, vol.25.
14. Rao Mrinalini (2004)- Value to value..., Life Positive, Dec. 2004, Page 54-55
15. Shailaja H. and Sanand Raj (1994); Mental health status and value orientation among alcohal and drug addicts, Psychological studies, 1994(Mar), 39 (1) , 21-24
16. Sherry G.P. And Verma R.P. (2000)- Manual for Personal Values Questionnaire, National Psychological Corporation, 4/230 Kacheri Ghat, Agra- 282004 (U.P.) India
17. Singh R.P.(1986); Measures of values of the generation gap; Praachi Journal of psycho-cultural Dimensions, vol. 2, No. 122

18.Solanki, C.P.(1990); Actions of violence restoring students; Prachi Journal of Psycho-cultural Dimensions, vol. 6
18. आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा (1998) – जीवन देवता की साधना–आराधना, वांगमय–2, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा , द्वितीय संस्करण।
19. आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा (1998) – अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवीय व्यक्तित्व, वांगमय–21, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा , द्वितीय संस्करण।
20 आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा (1998) – नीरोग जीवन के महत्वपूर्ण सूत्र, वांगमय–39, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा , द्वितीय संस्करण।
21. आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा (1998) – सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक कांति, वांगमय–65, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा , द्वितीय संस्करण।
22. आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा (1998) – युग निर्माण योजना– दर्शन, स्वरूप व कार्यकम, वांगमय–66, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा , द्वितीय संस्करण।
23 आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा (1998) – तीर्थ सेवनः क्यों और कैसे ?, वांगमय–37, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा , द्वितीय संस्करण।
24. आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा (1998) – भव्य समाज का अभिनव निर्माण, वांगमय–46, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा , द्वितीय संस्करण।
25. पण्डया डॉ0 प्रणव (2002)– एक आदर्श जीवन पद्धति की बानगी, अखण्ड ज्योति, नवम्बर 2002, पृष्ठ– 14

****